4J14HD

पाठ 10

संत रविदास

भारतीयों ने वर्ण–भेद को नकारते हुए संत–महात्माओं को सदा सम्मान दिया है। संत रविदास, जिन्हें आम जनता रैदास के नाम से पुकारती है, ऐसे ही संत थे। गुरु रामानन्द ने उन्हें शिष्य बनाया और रविदास ने कृष्ण के प्रेम में दीवानी राजघराने की महिला मीरा को अपनी शिष्या बनाया। उन्हीं संत रविदास का संक्षिप्त जीवन–परिचय इस पाठ में पढ़ें।

भारत के इतिहास में एक समय ऐसा था जब धर्म के नाम पर भारतवासियों पर बहुत अत्याचार हुए। उस समय के शासक निर्दोष जनता को लूटने और सताने को ही अपना कर्त्तव्य समझते थे। उच्च जाति माननेवाले लोग अपने से छोटी जाति को माननेवाले लोगों पर अत्याचार करते थे। दुखी लोगों की पुकार सुननेवाला कोई नहीं था। ऐसे समय में भारत में कई संतों और महात्माओं ने जन्म लिया। उनमें से एक थे– संत रविदास, जिन्हें संत रैदास भी कहते हैं।

संत रविदास का जन्म माघ पूर्णिमा संवत् 1433 को बनारस के समीप मँडवाडीह गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम मानदास और माता का करमा देवी था। इनके पूर्वज चमड़े का काम करते थे।

बचपन से ही बालक रविदास की रुचि साधु–महात्माओं के सत्संग में थी। जहाँ भी पूजा–पाठ अथवा हरिकीर्तन होता, वे वहीं पहुँच जाते। ऐसे समय वे प्रायः घर का काम–धाम भूल जाते। उनके ऐसे स्वभाव को देखकर उनके माता–पिता को चिंता हुई कि उनका बेटा कहीं बैरागी न हो जाए। इसलिए उन्होंने रविदास का विवाह कर दिया और यह कहकर– ''बेटा, कमाओ और खाओ,'' उन्हें घर से अलग कर दिया।

पत्नी लूणादेवी के साथ रविदास घास–फूस की झोपड़ी बनाकर रहने लगे। वे चमड़े का काम करते और उसी आय पर अपना जीवन निर्वाह करते। कुछ वर्षों के पश्चात् उनके यहाँ एक पुत्र–रत्न भी पैदा हुआ।

शिक्षण–संकेत : *कक्षा में कबीर, नानक, दादू, गुरु घासीदास आदि संतों की चर्चा कीजिए और संत रविदास के संबंध में संक्षेप में बताइए। एक अनुच्छेद का आदर्श वाचन कीजिए और बच्चों से अनुकरण वाचन कराइए। संत रविदास के संबंध में अतिरिक्त जानकारी लेकर कक्षा में बताइए। समाज में सब बराबर हैं, यह भी बताएँ। पाठ का एक–एक अनुच्छेद एक–एक समूह को देकर परस्पर चर्चा कराएँ। अन्त में पूरे पाठ पर चर्चा करें।*

विवाह–बंधन रविदास को ईश्वर–भक्ति से विमुख नहीं रख सका। साधु–सेवा, सत्संग तथा पूजा–पाठ निरंतर चलता रहा।

उन दिनों स्वामी रामानंद जी की भक्ति, ज्ञान तथा विद्वता की प्रसिद्धि पूरे भारत में फैली हुई थी। वे बनारस के ही रहनेवाले थे। प्रभु–भक्ति के प्यासे रविदास स्वामी जी के चरणों में पहुँच गए। शिष्य की अथाह भक्ति ने स्वामी जी का हृदय जीत लिया। रविदास स्वामी रामानंद के शिष्य बन गए। अब रविदास को अपना लक्ष्य प्राप्त करने का मार्ग मिल गया।

संत रविदास संत कबीर के गुरु भाई भी हो गए। दोनों जात–पात तथा ऊँच–नीच में विश्वास नहीं रखते थे। दोनों ने समाज के झूठे आडंबरों का विरोध किया। रविदास विनम्र और मधुर भाषी थे। यही कारण है कि समाज के बहुत–से लोगों ने उनके विचारों को बहुत ध्यान से सुना और उन्हें ग्रहण किया।

गुरु रविदास के शिष्यों तथा भक्तों की संख्या दिनों–दिन बढ़ने लगी। उनकी इस प्रसिद्धि को ऊँची जाति के लोग सह नहीं सके। वे काशी नरेश वीरदेव सिंह के दरबार में पहुँचे। उन्होंने रविदास की शिकायत की – ''महाराज, आपके राज्य में रविदास नाम का एक व्यक्ति है। वह अपने आपको बड़ा भक्त समझता है। वह लोगों को गुमराह कर रहा है। वह कहता है कि सभी लोग बराबर हैं। यदि ऐसे धर्म विरोधी व्यक्ति के कामों को न रोका गया तो समाज छिन्न–भिन्न हो जाएगा।''

राजा ने उन लोगों की बात शांतिपूर्वक सुनी और कहा – ''एक पक्ष की बात सुनकर ही निर्णय दे देना राजा का धर्म नहीं। मैं स्वयं संत जी से मिलूँगा और तभी कोई निर्णय करूँगा।''

दूसरे दिन काशी नरेश संत रविदास की कुटिया पर पहुँच गये। संत जी उन्हें देखकर चकित रह गए । उन्होंने आदरपूर्वक राजा से उनके आने का प्रयोजन पूछा।

राजा बोले – संत जी, मैं आपसे कुछ पूछने आया हूँ। क्या आप लोगों को यह शिक्षा दे रहे हैं कि समाज में कोई छोटा–बड़ा नहीं होता? क्या समाज में सभी बराबर हैं?

संत रविदास मुस्कराए और निर्भय होकर बोले –

''रविदास जन्म के कारणै, होत न कोऊ नीच।
नर कूँ नीच करति है, ओछे करम की कीच।।
जात–पात के फेर महिं, उरझि रहइ सब लोग।
मानवता कूँ खात है, रविदास जात का रोग।।''

काशी नरेश ध्यानमग्न होकर संत जी की वाणी सुन रहे थे।

संत जी ने बात जारी रखी – ''राजन्, जन्म और जाति से कर्म बड़ा है। जो कर्म से ऊँचा है, वही वास्तव में ऊँचा है। राजा भी वही महान है जो न्यायकारी है। अन्यायी राजा, यदि ऊँचे कुल का भी होगा, तो भी उसे हीन ही समझा जाएगा।''

काशी नरेश ने संत जी के चरण पकड़ लिए और विनय की– ''गुरु जी, इस प्राणी को भी स्वीकार कीजिए। मेरा भी उद्धार कीजिए।''

संत रविदास ने काशी नरेश का कल्याण तो किया ही, भारत के असंख्य लोगों को मानव–प्रेम और ईश्वर–भक्ति का पाठ भी पढ़ाया। उनकी प्रसिद्धि देश के कोने–कोने में फैल गई। चित्तौड़ के महाराणा साँगा सहित कई राजाओं ने उनकी शिक्षा को ग्रहण किया। कृष्ण–भक्ति की दीवानी मीराबाई ने तो उनसे दीक्षा भी ली थी। गुरु नानकदेव जी तो बात–बात में संत रविदास जी की वाणी का उल्लेख करते थे।

संत रविदास के जीवन की एक घटना का कई जगह उल्लेख हुआ है। कहते हैं कि कोई सिद्ध पुरुष उनकी कुटिया पर पहुँचे। संत जी का जीवन बहुत ही साधारण था। उन सिद्ध पुरुष को संत जी की आर्थिक स्थिति देखकर बहुत दुख हुआ। उन्होंने संत जी के अभावमय जीवन में परिवर्तन लाने के लिए उन्हें एक मणि देनी चाही। उसकी विशेषता बताते हुए सिद्ध पुरुष ने बताया, ''यह मणि अपने स्पर्श से लोहे की वस्तु को सोने की बना देगी। इससे आपकी दरिद्रता दूर हो जाएगी।''

संत रविदास ने कहा– ''महाराज! मुझे धन की कोई इच्छा नहीं। आप यह मणि अपने पास ही रखिए।''

सिद्ध पुरुष ने जब बहुत अधिक ज़ोर दिया तो संत रविदास ने कहा, ''महाराज! आप इतना आग्रह कर रहे हैं तो आप ही इसे झोपड़ी में कहीं रख दीजिए।''

सिद्ध पुरुष उस मणि को झोंपड़ी में, घास–फूस के बीच में, रखकर चले गए। एक वर्ष बाद वे फिर से संत रविदास से मिलने आए। उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि रविदास की आर्थिक स्थिति में कोई बदलाव नहीं आया। उन्होंने संत जी से पूछा– ''संत जी, मैं आपको मणि देकर गया था। उसका आपने क्या किया?''

संत रविदास बोले– ''महाराज! वह, जहाँ आप रख गए थे, वहीं देख लीजिए। वह वहीं होगी।''

सिद्ध पुरुष ने तलाश किया तो वह मणि उन्हें उसी जगह पर रखी मिली। उन्हें लगा कि यह व्यक्ति निर्लोभी है। इसे धन की कोई कामना नहीं।

संत रविदास उच्च कोटि के भक्त होने के साथ ही कबीर के समान एक उच्च कोटि के समाज–सुधारक भी थे। वे जाति–प्रथा के विरोधी थे। समाज में कोई छोटा, कोई बड़ा नहीं। सब समान हैं। वे हिंदू–मुसलमानों की एकता में विश्वास करते थे। उन्होंने लिखा है –

मंदिर मसजिद दोउ एक हैं, उन महँ अंतर नाहिं।
रविदास राम रहमान का, झगड़ा कोऊ नाहिं।।

उन्होंने हिंदू –मुसलमानों के बीच फैले द्वेष को मिटाने का प्रयत्न किया। हम उनकी महानता इसी बात से आँक सकते हैं कि मीराबाई जैसी कृष्ण–भक्ति में डूबी राजघराने की महिला ने उनका शिष्यत्व ग्रहण किया। युगों–युगों तक गुरु रविदास की वाणी भूले–भटके लोगों को मानव–प्रेम का पाठ पढ़ाती रहेगी।

शब्दार्थ

शताब्दी	–	सौ वर्ष का समय	हीन	–	छोटा, नीच
निर्दोष	–	बिना दोष के	समीप	–	पास
पूर्वज	–	पुरखे	निर्वाह करना	–	निभाना, व्यतीत करना
सत्संग	–	अच्छे लोगों की संगति			
निरंतर	–	लगातार	उरझि	–	उलझना
आडंबर	–	दिखावा	वाणी	–	बोली
निर्भय	–	बिना डर के	पक्ष	–	गुट
डारि है	–	डालेगी	गुमराह करना	–	भटकाना
प्रयोजन	–	कारण	चकित होना	–	आश्चर्य में पड़ना
सभ	–	सब	ओछे	–	बुरे, नीच, छोटे
अत्याचार	–	बहुत बुरा व्यवहार करना			
अथाह	–	जिसकी थाह न ली जा सके।			
सर्वप्रियता	–	सबको समान मानकर प्यार करना			
छिन्न–भिन्न होना	–	अलग–थलग हो जाना, टुकड़े–टुकड़े हो जाना			

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 संत रविदास का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?

प्रश्न 2 संत रविदास के विचारों से सहमत अन्य संत–महात्माओं के नाम लिखो।

प्रश्न 3 काशी के लोग संत रविदास से क्यों नाराज थे ?

प्रश्न 4 संत रविदास ने जनता को क्या उपदेश दिए ?

प्रश्न 5 किस घटना से प्रभावित होकर काशी नरेश संत रविदास की शरण में गए ?

प्रश्न 6 किस घटना के कारण हम यह कह सकते हैं कि संत रविदास के मन में धन के प्रति कोई आकर्षण नहीं था?

प्रश्न 7 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के चार–चार विकल्पों में से सबसे सही विकल्प चुनकर लिखो।

अ. रविदास के माता–पिता चिंतित रहते थे –

(क) क्योंकि वे पढ़ते–लिखते नहीं थे।

(ख) क्योंकि वे साधु–संतों के पीछे लगे रहते थे।

(ग) क्योंकि वे बड़े हो गए थे, उन्हें उनका विवाह करना था।

(घ) क्योंकि वे हरिकीर्तन में घर का काम–धाम भूल जाते थे।

ब. एक न्यायप्रिय राजा को किसी शिकायत पर निर्णय लेते समय –

(क) शिकायतकर्त्ता के पक्ष पर निर्णय देना चाहिए।

(ख) अपने मंत्रियों से जानकारी लेकर निर्णय देना चाहिए।

(ग) दोनों पक्षों की बात सुनकर निर्णय देना चाहिए।

(घ) मन की बात मानकर निर्णय देना चाहिए।

स. संत रविदास ने मणि का कोई उपयोग नहीं किया –

(क) क्योंकि वे मणि में विश्वास नहीं करते थे।

(ख) क्योंकि वे सिद्ध पुरुष में विश्वास नहीं करते थे।

(ग) क्योंकि धन के प्रति उनकी कोई कामना नहीं थी।

(घ) क्योंकि उनके गुरु ने ऐसा करने से मना किया था।

द. निम्नलिखित में से कौन–से दो कवि एक ही गुरु के शिष्य थे?

(क) रविदास और कबीर

(ख) रविदास और नानकदेव

(ग) रविदास और धर्मदास

(घ) रविदास और सूरदास

भाषातत्व और व्याकरण

- शिक्षक श्रुतलेख के रूप में निम्नलिखित शब्द बोलें और बच्चों को लिखने को कहें।

हरि–कीर्तन, घास–फूस, जात–पात, ऊँच–नीच, दिनों–दिन, मानव–प्रेम, समाज–सुधारक, भूले–भटके, आकर्षण, विश्वास, निर्लोभी, विश्वास।

प्रश्न 1 इन शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करके लिखो–

जात–पात, ऊँच–नीच, मानव–प्रेम, साधु–संत, भूले–भटके।

प्रश्न 2 निर् + दोष या निः+दोष मिलकर बना है 'निर्दोष'।

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों को तोड़कर लिखो –

निर्गुण, निर्भय, निर्मल, निर्दय।

प्रश्न 3 निम्नलिखित शब्दों के जोड़ों में से सही शब्द चुनकर लिखो–

सत्संग / सत्संघ, निर्वाह / निग्राह, रवीदास / रविदास, चरन / चरण, गुरु / गुरू, रवि / रवी

प्रश्न 4 कोष्ठक में से उचित शब्द चुनकर खाली स्थान भरो।

क. भगवन्! इस पापी का ..... कीजिए। (उद्धार / उदार)

ख. संत रविदास की ..... पूरे भारत में फैली है। (प्रसिद्धि / प्रसिद्ध)

ग. लोग रविदास को बहुत बड़ा ..... समझते थे। (भक्त / भक्ति)

घ. राजा ने उन लोगों की बातें बड़ी ..... से सुनीं। (शांत / शांति)

प्रश्न 5 'व्यापार' शब्द में 'ई' की मात्रा (ी) लगने से बना है 'व्यापारी'। नीचे दिए गए शब्दों से इसी प्रकार नए शब्द बनाकर लिखो और वाक्यों में प्रयोग करो।

व्यवसाय, मेहनत, मजदूर, कारीगर।

प्रश्न 6 निम्नलिखित वाक्यों में से संज्ञा पहचानों और उनके प्रकार लिखो–

क. गुरू रविदास के शिष्यों और भक्तो की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ने लगी।

ख. चित्तौड़ के महाराणा साँगा तथा कई राजाओं ने उनकी शिक्षा को ग्रहण किया।

रचना

- संत रविदास की तरह ही किसी अन्य संत के बारे में पता लगाकर निम्न बिन्दुओं में लिखो–
  1. पूरा नाम।
  2. जन्म स्थान एवं तिथि।
  3. अभिभावक का नाम।
  4. उनके द्वारा किये गये उल्लेखनीय कार्य।

योग्यता–विस्तार

- संत रविदास एक कवि भी थे। उनकी लिखी कविताएँ खोजो और उनका कक्षा में सस्वर वाचन करो।
- मीराबाई एवं कबीर दास की कविताओं को खोजकर उन्हें कक्षा में सुनाओ।
- कबीर, दादू, नानक आदि संत कवियों के चित्र संग्रह कर अपनी चित्रों की पुस्तिका में लगाओ।
- कैलेण्डर देखकर अन्य महापुरूषों की जयंतियों की सूची बनाओ।

4J9ZJ1